सम्पूर्ण मानवता के मसीहा 'प्रजापिता ब्रह्मा'

कुछ लोग संसार की भीड़ में अलग ही दिखते जबकि सबकी शरीर पंचतत्वों से ही बनी है। उनकी दिव्यता से सारी दुनिंया धन्य हो जाती है। ऐसी आत्मायें परमात्मा की प्रतिरूप कहलाती हैं। वे कोटों में कोई-कोई में भी कोई बन जाती हैं। फर्श पर रहते हुए भी फरिश्ता हो जाती हैं। वे बूंद से महासगार बनने जैसी ईश्वरीय शक्ति ग्रहण कर लेती हैं। मोम की आरी से पहाड़ भी काट सकती हैं। सीपी से समुद्र सुखा सकती हैं। प्रजापिता ब्रह्मा जी धरा को स्वर्णिम बनाने के लिए तमोप्रधान संसार का विष पीकर भी तरल व सरल बने रहे। 18 जनवरी 1969 की शाम, उन्हें बूंद से महासागर बनाकर इन नजरों से ओझल किया पर अव्यक्त फरिश्ता बना दिया।

साकार में रहते हुए भी वे निराकार शिव को अपने जीवन में इस कदर समा लिए थे कि दोनों को अलग समझना असम्भव लगता था। परमपिता, पमरशिक्षक, परम सतगुरू के सहयोग से वे भारतीय आदि सनातन देवी-देवताई संस्कृति के संस्थापक बन गये। भविष्य में वे ही मानवता के श्रेष्ठतम मसीहा और दिव्यता के सच्चे सिपहसालार कहलायेंगे। वे ज्ञान मुरली वादन के साथ-साथ पत्र लेखन के भी धनी थे। हरफनमौला ब्रह्मा बाबा को ब्रह्मा वत्सों ने सहमी-सहमी नजरों से श्रद्धा सुमन चढ़ाने के लिए हिस्ट्री हॉल में रखा था। ओस कणों ने उन पर आंसू के रूप में फूॅल चढ़ाये थे। दिल खोलकर रात की चांदनी अपने आध्यात्मिक पैगम्बर को निहारती रही। आँसू की बूँदों के साथ आबू की पर्वतमालाओं ने सिर झुकाकर उन्हें नमन किया।

सच में वे स्वयं ही रूहानी संस्थान थे। साक्षात अध्यात्म के मूल थे। मिशन के साथ ही दैवी संस्कृति के लिए आन्दोलन व दिव्यता के अग्रदूत थे। जीवन मूल्यों के लिए अद्वितीय उदाहरण भी थे। समस्याओं के समाधान स्वरूप के साथ सतयुगी दुनियां के संविधान निर्माता भी थे। तमाम उतार-चढ़ाव को देखते हुए भी ईश्वरीय इशारों के अनुसार ही स्वयं को चलाये। उनके सिद्धांत व उन्नत विचार भी अब सभी को उर्जान्वित करते रहते हैं। उनका कर्मयोग सभी के लिए जीवन दर्पण बना हुआ है। उनकी अनुभूतियां परिस्थितियों में सभी के लिए सम्बल प्रदान करती हैं। तूफानों में भी वे अचल-अडोल और हर्षित रहते थे। सिद्धांतों व आदर्शो की पालना करते हुए भी सदा सृजन और शालीनता के पर्याय बने रहे। अन्तिम श्वांसों तक विश्व बन्धुत्व और देवत्व का पाठ पढ़ाते रहे। उनकी त्याग तपस्या सेवा ही ब्रह्माकुमारीज के नन्हें बीज को वट वृक्ष बनाकर सारे संसार में फैला दिया।

यज्ञ इतिहास में पहली बार बाबा अन्तिम दिन प्रातः कालीन ईश्वरीय महावाक्य सुनाने नहीं गये। प्यार से बोले आओ बच्चों! पत्र लिखते है। हिलमिलकर सदा उपराम स्थिति में एक रस होकर रहना। शक्तियों को आगे रखने से ही साधना व सेवा में सफलता मिलेगी। तबियत हल्की होने पर डाक्टर बुलाने के लिए कहने पर वरदानी हाथ हिलाकर बोले 'डाक्टर क्या करेगा? मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ। सायंकालीन मुरली सुनाने के बाद पहली बार बोले 'अच्छा बच्चों विदायी'। क्लास से बाहर निकलते हुए रूमाल हिलाकर कहने लगे 'सदा निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनकर रहना। चारपाई पर बैठ दादा विश्व रतन की गोद में शरीर और दादी प्रकाशमणि जी के हाथों में हाथ दे अपनी शक्तियाँ उन्हें विलकर गये। सम्पूर्ण मानवता के प्रति उनका अटूट प्यार आकाश में

उगने के लिए चला गया। बेहद की सेवा तथा परमधाम वासी परमात्मा की थाह पाने के लिए अयक्त वतनवासी बन गये। ज्ञान मुरली और दिव्य संदेशों के रूप में आज भी उनकी शुभ भावनायें आकाश को चीर आती हुई सबमें सुकून भरती रहती है। कलियुगी आत्माओं की आंसू पोछने के लिए ऐसी अनोखी विभूति कल्प में एक ही बार अवतरित होती है। सच में उनके अनुभवी -दिव्य तन का आधार पाकर सर्वशक्तिवान शिव भगवान भी गर्व और गौरव का अनुभव कर रहे हैं। ब्रह्माकुमार-कुमारियों के दिल से भी आवाज निकलती रहती है। *'तेरे लबों से निकला ज्ञानामृत आज भी दिलोदिमाग को दिव्य बना रहा है।'* हमें हमेशा के लिए ईश्वरीय यादों में तपकर कंचन बनने के लिए कह गये हैं। नि:संदेह वे अव्यक्त वतनवासी, कालजयी ब्रह्मा बन गये। आज भी उनका रन्ध्र-2 जीवनमुक्ति का संदेश देने में तल्लीन है। अनुभूति की वाटिका में श्रद्धा विश्वास का सौरभ बिखेरने के लिए मात्र वे नजरों से ही छिपे हैं। हम बच्चों के दिल दर्पण में सदा मम्मा-बाबा का ही चित्र बना रहता है।

इश्वरीय स्मृतियों में सदा रस मग्न रहने से मम्मा-बाबा सबेरे दो बजे ही जाग जाया करते थे। मलय समीर के हुल्लास से सारा दिन हर्षित रह रूहानी पालना देते थे। दिन भर के संकल्पों को ईश्वर अर्पित कर कमलासन पर न्यारे-प्यारे बन सो जाते थे। लहर विहीन झील की तरह शीतल-शात थे। सीमा के प्रहरियों से भी सजग रहते थे। समीप आते ही स्पष्ट हो जाता कि निर्भीकता से ही अज्ञान अन्धकार को भगाया जा सकता है। उदार होकर ही बेहद की सेवा की जा सकती है। स्वतंत्रता और पवित्रता के बिना कुछ भी नया नहीं हो सकता है। वासनाओं-कामनाओं से सदा ऊपर रहने के कारण वे असाधारण व्यक्तित्व वाले थे। वे सदा ही धीर-वीर-गम्भीर और कर्मों के प्रति दृढ़ थे। पुरुषोत्तम संयगयुग के डाईरेक्टर-हीरो एक्टर बन सच्चे अर्थों में पूरे कल्प के लिए उदाहरणमूर्त, उद्धारमूर्त्त बन गये। प्रज्ञापुरूष, महापुरूष के साथ-साथ अनुभवीमूर्त्त होने से उनके ही पदचिन्हों का पूरी धरा अनुगमन करेंगी। ईश्वरीय ज्ञान के साथ सद्भावनाओं की निर्मल धारा उनके अन्त: करण में बहती ही रहती थी। उनकी जीवन पद्धति से जीवनमूल्य भी सुशोभित होते हैं।

बाबा गृहस्थ व व्यवसाय में बहुत लोकप्रिय थे जबकि बचपन में गरीब। अचूक परख शक्ति व व्यवहार कुशलता के कारण उन्हीं के नाम से उनकी मार्केट का नाम लिया आज भी जाता है। राजा-महाराजा तक उनके सफल जीवन का गुणगान करते थे। उनके सानिध्य से सभी के सभी मन्त्र-मुग्ध होते थे। परमात्मा द्वारा उनके तन का आधार लेने पर तो वे पूरी मानवता को सकाश-प्रकाश दे रहे हैं। सागर सी गम्भीरता, पर्वतों जैसी उच्चता और धरती जैसी धीरता उनके दिव्य व्यक्तित्व से झलकती रहती थी। तभी तो उनके साकार में न होते हुए भी किये हुए पुण्य सभी का पथ प्रशस्त करते रहते हैं। उनकी उज्जवल कीर्ति मुक्ति-जीवनमुक्ति का उपहार बांटती रहती है। सूरज को दीप दिखाने जैसा है उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की व्याख्या करना। गाली देने वालों को भी वे गले लगाते थे। पूरे ही कल्प का राज-रहस्य उनके जीवन में समाया मालूम पड़ता था। उनकी शीतल वाणी उषा काल के ओस कणों की तहर तप्त दिलों को राहत देती थी। गीत-संगीतमय जीवन चंचल मन वालों को भी प्यार में बांध लेता था। परम शत्रु कहलाने वाले विकारों से सहज ही वे स्वतन्त्र कर देते थे। उन्होंने अपने स्थूल शरीर को ही 18 जनवरी, 1969 को समेटा। जैसा सभी जन्म लेने वालों को तन छोड़ना ही पड़ता है। परन्तु मरने वालों में फिर से किसी का भी पुनर्जीवन साक्षात सामने नहीं दिखता। विश्व व्यापी ब्रह्माकुमारीज संस्था के आज भी वे ही सच्चे खिवैय्या हैं। मात्र स्मृतियों में ही जीवित नहीं हैं पर संरक्षक-संचालक

की तरह हर कदम पर हम सभी की पूरी-पूरी साज-सम्भाल भी करते हैं। तभी तो बरबस दिल से आवाज निकलती रहती है।

काल तुमको डंस न पाया-मौत को तुमने हराया।
तुम तो मर कर भी जिये हो-बगियाा में खुशबू भरे हो।।

ज्वार-भाटों के द्वारा सागर अपने तटों पर बहुत कुछ विखेर देता है। बादलों की ओट में होने पर भी सूर्य अपनी आभा का आभास करा ही देता है। सुगन्धित फूल दूर-सुदूर तक सुरभित सौरभ फैलाते रहते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा भी देश-काल-वातावरण और सम्बन्धों के बन्धन में होने पर भी विश्व नव निर्माण की आध्यात्मिक योजनाओं को साकार करते रहे। उनकी अन्तिम काया भी अनुपमेय थी। गेहुँए रंग में नहाया उनका व्यक्तित्व हरेक के जीवन में खुशबू विखेर जाता था। श्रद्धा और अपनत्व से लिपटी उनकी जीवन पद्धति अविस्मरणीय थी। पर्वत ऊंचे होते पर गहरे नहीं। सागर गहरे होते पर ऊंचे नहीं। ये दोनों ही विशेषतायें उनमें एक से बढ़कर एक होने से वे अद्वितीय लगते थे। झिलमिलाते मन में आज भी उनकी सुखद स्मृति आते ही हर आत्मा उनके चित्र और चरित्र से तन्मय हो जाती है। उनसे पमरपिता का प्यार पा लेने वाला तो जैसे महासागर में लहराते धन्य-धन्य किया करता था। सत्तर सालों से जो उनकी ही पालना में बढ़ते गये उनके तो कहने ही क्या? वे अप्रतिम प्रतिभा के ही धनी नहीं, अन्तर्यामी और परम स्नेही भी थे। परमात्मा के प्रति स्पष्टवादिता और निर्भीकता उनके चेहरे और चलन से भी झलकती थी। ज्ञान सिन्धु के मंथन से उन्हें उपलब्ध हुए थे सोलह कला बनाने वाले ज्ञान के रत्न। ज्ञान मुरली का अमृत वह कालजयी आविष्कार है जिससे मनुष्य में देवत्व जागृत होने लगता है। सदगुणों से समलंकृत होकर व्यक्ति को अमरत्व प्राप्त हो जाता है।

उस अतुलनीय व्यक्तित्व की किससे तुलना की जाय? उनकी गौरव-गरिमा, महिमा और रूहानी उष्मा को सीमा में बांधा नहीं जा सकता। उन्हें पाकर माँ भारती सुजलां-सुफलाम् मलयज शीलाम कहलाती है। ऐसे नयनाभिराम योगी तू आत्मा को सूर्य अपना प्रकाश उड़लने के लिए उगता है। उसका प्रकाश फिर भी शाम को ढल जाता पर ब्रह्मा सो विष्णु सो देवता-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र रूप से मुख्य अभिनेता का अभिनय करती हुई यह आत्मा कल्प के अन्त में पुनः प्रजापिता ब्रह्मा जैसा परम तेजस्वी-ओजस्वी पद प्राप्त कर लेती है। चारों ही युगों में जगमगाने वाली इस आत्मा की धरा, हवा के द्वारा अपने सौरभ से अभिषेक कर रही है। उनके ही पदचिन्हों पर चलने वाली जगदम्बा सरस्वती, दादी प्रकाशमणी, दादी जानकी, दादी गुलजार जैसी अनेकों आत्मायें संसार सागर का गरल पीती हुई सदा सरल व तरल बनी रहती हैं। उनके ही कमलमुख द्वारा निकली परमहितकारी शिव की मुरली से अगम-निगम का सार-सारांश मिलता रहता है। उसी के आधार से तमोप्रधान संसार होते हुए भी ब्रह्माकुमार कुमारियों में सदा ईश्वरीय उमंग-उत्साह छाया रहता है। अब गति-सदगति को ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में पाने के लिए अंगणित आत्मायें उन्हीं की तरफ कदम बढ़ाती जा रही हैं। उनके वरदानी बोल सभी को आलोकमय बना सकते हैं। उनकी अवतरण भूमि मधुबन के शान्तिवन-ज्ञान सरोवर का चक्कर लगाने से ऐसी सुखदायिनी अनुभूति होती जैसे -

तेरे मधुबन से सब गुजरते इस तरह अब भी कि जैसे तत्प रेगिस्तान में जलधारा से गुजरें।
ऐसे जग नायक, महामानव, शिव के नन्दी गण को कोटिशः प्रणाम